Exam.Code:0008
Sub. Code: 0661

2053

B.A./B.Sc. (Hons.) Fourth Semester

Sanskrit

Paper - II [Opt. (ii)]: Kalidas

Time allowed: 3 Hours

Max. Marks: 90

x-x-x

नोट- (i) सभी प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।

(ii) सुलेख तथा भाषा की शुद्धता पर ध्यान दीजिए।

(iii) प्रत्येक प्रश्न के सभी भाग एक ही स्थान पर कीजिए।

---

1. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखें-** 2x15= 30

   i. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार विदूषक का चरित्र-चित्रण लिखें।

   ii. अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रकृति-चित्रण पर प्रकाश डालें।

   iii. कालिदास की नाट्यकला पर प्रकाश डालें।

   iv. कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुसार शकुन्तला के प्रेम एवं सौंदर्य का वर्णन करें।

2. **निम्नलिखित में से किन्हीं चार श्लोकों का सप्रसंग अनुवाद कीजिए-** 4x10= 40

   i विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
   स्मरिष्यति त्वां न सबोधितोऽपिसन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥

   ii क्व वयं क्व परोक्षमन्मथो मृगशावैः सममेधितोजनः।
   परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः॥

   iii शुश्रूषस्वगुरून्कुरु प्रियसखी वृत्तिं सपत्नीजने
   भर्तुर्विप्रकृताऽपिरोषणतया मा स्म प्रतीप गमः।
   भूयिष्ठं भव दक्षिणापरिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
   यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

   iv अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
   जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

   v अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणी बाहू।
   कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥

   vi यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
   कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
   वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
   पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः॥

3. **निम्नलिखित में से किन्हीं दो सूक्तियों की सप्रसंगव्याख्या कीजिए-** 2x10= 20

   i सन्निवृत्त्यैतदतीतमेतेमनोरथानामतटप्रपाताः॥

   ii सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः।

   iii अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्वसूरिभिः।

* * *